बच्चों का अख़बार

RNI No. UTTHIN/2003/10745 वर्ष 10, अंक 104, पृष्ठ 8, देहरादून, मई–जून, 2020 1995 से सतत प्रकाशित

दीदी की चिट्ठी

प्यारे बच्चों,

आशा करती हूँ तुम सब इस कोरोना काल में स्वस्थ होंगे और अपने परिवार के सदस्यों के स्वास्थ्य का भी ध्यान रख रहे होंगे। कैसे? बार-बार उन्हें याद दिलाकर कि हाथ धोएं, मास्क लगाएं, बाहर की चप्पल अंदर न लाएं, बाजार का सामान सीधा घर के अन्दर ना लाएं और घर के अंदर आने पर बाहर के कपड़े निकाल कर दूसरे स्वच्छ कपड़े पहनें। अच्छा हो अगर नहाकर पहनें। यह सब तुम्हें भी पालन करना है। अपनी व्यस्तता की वजह से कई बार बड़े भूल जाते हैं। इसलिए याद दिलाने की जिम्मेदारी तुम सब बच्चों पर है।

एक बात और कोरोना से हमें डरना नहीं है उसका सामना करना है समझदारी से नियमों का पालन करते हुए। कोरोना की वजह से हम सब की जिन्दगी थम सी गई थी। अब धीरे-धीरे काम तो शुरू करना ही होगा। क्योंकि हम जान गए हैं कोरोना हमारा साथ इतनी जल्दी छोड़ने वाला नहीं है। जब तक वैक्सीन नहीं आ जाती तब तक हम समझदारी से, धैर्य से और ध्यान से अपना कार्य करेंगे।

यह अंक कोरोना स्पेशल है और शहरों से, गांवों से बच्चे कोरोना पर अपने विचार हमारे साथ साझा कर रहे हैं। बच्चों की सोच, समझदारी और भावनाओं को पढ़कर मैं बहुत खुश हूं। अब हम सब अपने देश के ही सामान को खरीदेंगे और देश की अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाएंगे। हम सबके प्रयास से हमारा देश इस कठिनाई से उबर पाएगा। बच्चों का योगदान भी बहुत अहम है। वे भारतीय कंपनी की नमकीन, चिप्स, ठण्डा, मोबाइल, कपड़े, जूते, बैग, घड़ी इत्यादि उपयोग में लाएंगे।

मुझे अपने प्यारे बच्चों से पूरी आशा है वह अपने देश के लिए असम्भव कार्य को भी सम्भव करके दिखाएंगे और देश की प्रगति में योगदान भी देंगे।

तुम्हारी दीदी,
सुधा

शुक्रिया

- डॉक्टर
- नर्स
- सफाई कर्मचारी
- अस्पताल का हर एक कर्मचारी
- पुलिस
- कोरोना कमांडोज
- देश के सभी लोग जो कोरोना से हमारी सुरक्षा कर रहे हैं
- सेना

11 मई
विश्व प्रवासी पक्षी दिवस

22 मई
अंतराष्ट्रीय जैवविविधता दिवस

5 जून
विश्व पर्यावरण दिवस

17 जून
विश्व मगरमच्छ दिवस

विज्ञान की पोटली

भारतीय पैंगोलिन (Indian Pangolin) कौन है यह?

गहरे-भूरे, पीले-भूरे या रेतीले रंग का शुंडाकार जीव है पैंगोलिन। इसके शरीर पर केरोटिन से बने शल्क (scales) होते हैं। इनसे वह अपनी रक्षा करते हैं। इसे "वज्रशल्क" नाम से भी जाना जाता है। इसे सल्लू सांप भी कहते हैं। यह बहुत ही सीधा सादा वन्य जीव है। यह बेहद शांत प्रकृति का जीव होता है। यह अफ्रीका और एशिया में पाया जाता है। भारत में यह उत्तराखंड में पाया जाता है। यह फोलीडोटा गण का एक स्तनधारी (mammal) प्राणी है। इस पर विलुप्ती का खतरा मंडरा रहा है। यह संकटग्रस्त प्रजाति (Endangered species) में शामिल है।

पैंगोलिन चींटी व दीमक खाता है। पैंगोलिन का जैवविविधता में महत्वपूर्ण स्थान है। उत्तराखण्ड वन विभाग और भारतीय वन्यजीव संस्थान संयुक्त रूप से पैंगोलिन के संरक्षण के लिए प्रयासरत हैं। ग्रामीण लोग टोना-टोटका के लिए इसका शिकार करते हैं। अंतराष्ट्रीय बाजार में इसके मांस, चमड़ी, शल्क व हड्डियों की काफी मांग है। चीन व वियतनाम जैसे कई देशों में इसे खाते हैं। इसलिए इसका शिकार किया जाता है।

पैंगोलिन के संरक्षण के लिए सरकार क्या कर रही है?

यह एक संकटग्रस्त प्रजाति है। इसके संरक्षण के लिए जहा यह पाया जाता है वहां उसे:

1. चिन्हित किया जा रहा है।
2. उनके लिए अनुकूल वातावरण बनाया जा रहा है।
3. शिकारियों पर पैनी नजर रखी जा रही है।

कोरोना वायरस क्या है? (COVID 19)

कोरोना वायरस (covid 19) का संबंध वायरस के ऐसे परिवार से है जिसके संक्रमण से जुकाम से लेकर सांस लेने में तकलीफ जैसी समस्या हो सकती है। इस वायरस को पहले कभी नहीं देखा गया है। इस वायरस का संक्रमण दिसंबर में चीन के वुहान में शुरू हुआ था। W.H.O. के मुताबिक बुखार, खांसी, सांस लेने में तकलीफ इसके लक्षण हैं। अब तक इस वायरस को फैलने से रोकने वाला कोई टीका नहीं बना है। वैज्ञानिक शोध कार्य कर रहे हैं।

★ सृष्टि चौहान, कक्षा-12, ग्राम रखटाड, कालसी ब्लाक, देहरादून Youth Group

क्या है इस बिमारी के लक्षण?

इसके लक्षण फ्लू से मिलते-जुलते हैं। संक्रमण के फलस्वरूप बुखार, जुकाम, सांस लेने मे तकलीफ, नाक बहना और गले में खराश जैसी समस्या उत्पन्न होती है। यह वायरस एक व्यक्ती से दूसरे व्यक्ति में फैलता है। इसलिए इसे लेकर बहुत सावधानी बरती जा रही है। कुछ मामलों मे कोरोना वायरस घातक भी हो सकता है। खास तौर पर अधिक उम्र के लोग और जिन्हें पहले से अस्थमा, डायबिटिज और हार्ट की बिमारी है। स्वस्थ रहो सुरक्षित रहो।

★ मोनिका चौहान, बी०ए०, गाँव रखटाड, जागथाड, कालसी ब्लाक, Youth Group

॥ नमामि गंगे ॥

गंगा में श्रद्धा के सुमन

भाग-1

जब गंगा के प्रदूषण की बात की जाती है तो अक्सर औद्योगिक अपशिष्ट का जिक्र होता है। किन्तु पुष्प प्रदूषण पर शायद ही किसी का ध्यान जाता है।
गंगा फूलों से भी प्रदूषण होत रही है। आश्चर्य हो रहा है पर यह सच है।
16% गंगा में प्रदूषण फूलों से हो रहा है। वह फूल जो तुम मानव मेरे जल में चढ़ाते हो और दूसरा जो मंदिरों से हर दिन आता है। यह सब मुझमे समाता है। अब भगवान का चढ़ावा तुम यहां वहां कूड़ेदान में तो फेंक नहीं सकते। भगवान नाराज हो जाएगें। तो फिर क्या करें? है तो माँ गंगा, चलो वहीं डालते हैं। पाप भी नहीं चढ़ेगा और पुण्य का पुण्य। माँ तो हमारी विवशता जानती है। भगवान की पूजा का सहारा लेकर तुम मानवों ने जल स्रोतों को बहुत प्रदूषित किया है। हर धार्मिक कचरे को जल मे बहाने की संस्कृति है हमारी। कहां तक यह सब सही है? सोचना तो पड़ेगा।

फूल किसे अच्छे नहीं लगते? रोता हुआ इंसान भी फूल की सुंदरता, कोमलता व खुशबू को देख सब गम भूल जाये। फूलो की उपस्थिति हर जगह है जैसे पूजा में, विवाह में, स्वागत समारोह में, सजावट में, मृत्यु में। यहां तक कि औषधियों और भोजन में भी फूल की उपस्थिति अनिवार्य हो गई है। आज तो फूलो की खेती रोजगार के रूप मे अपनायी जा रही है।

प्रकृति ने पुष्प तोहफे में देकर हम मानवों को अपना आभारी बना लिया है। पुष्प को देखते ही मन प्रसन्न हो जाता है। मानव ही नहीं कीट, पतंगे, तितली और मधुमक्खी उनका तो जीवन है पुष्प। पुष्प नहीं तो क्या खाएंगे वे? वैज्ञानिकों की दृष्टि में फूलो का मुख्य उद्देश्य पौधों के प्रजनन मे सहायता करना है।

हाँ, दोस्तों समय आ गया है कि मैं तुम्हें इस विषय पर कुछ गंभीर बातें बताऊं। आज मैं उन फूलों की बात कर रही हूँ जो तुम बहुत प्रेम से मेरे घाटों में मुझे चढ़ाते हो।

आज मुझे कवि सुमित्रा नंदन पन्त की कविता "एक फूल की चाह" बहुत याद आ रही है। क्यों ना हम सब अपनी पुरानी यादें ताजा कर लें।

एक फूल की चाह

चाह नहीं मैं सुरबाला के
गहनो में गूँथा जाऊँ
चाह नहीं, प्रेमी-माला में
बिंध प्यारी को ललचाऊँ
चाह नहीं सम्राटों के शव
पर हैं हरि, डाला जाऊँ
चाह नहीं, देवों के सिर पर
चढ़ू भाग्य पर इठलाऊँ
मुझे तोड़ लेना वनमाली
उस पथ पर देना तुम फेंक
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जावें वीर अनेक ॥

फूल क्या चाहता है वह हमें समझना होगा।

मैं जानती हूँ तुम मानव बहुत श्रद्धा व प्रेम भाव से मेरे लिए दोनो में, और प्लास्टिक की पन्नी में पुष्प, दीप लेकर मेरे पास दौड़े चले आते हो। मैं जानती हूँ तुम पैसे बचाकर खरीदते हो यह सब, सोचते हो माँ के पास खाली हाथ कैसे जाएं? आदर करती हूँ मैं तुम्हारी इस भावना का। कुछ समय से मैं बहुत परेशानी झेल रही हूँ और इसलिए मजबूर होकर कुछ बता रही हूँ। माँ की बात ध्यान से सुनना। नाराज मत होना।

पृष्ठ सं. ③ का शेष भाग . . .

फूलों से हानि ! कैसे ?

① जब तुम मेरे घाटों में मंत्रों का उच्चारण करते हुए फूल व दीप दान करते हो तो जिस प्लास्टिक की थैली में तुम यह सब लाये थे वह तुम अनजाने में वहीं छोड़ देते हो। कुछ समय बाद वह मेरे पानी मे समा जाता है। कुछ अंतराल बाद यह प्लास्टिक की थैली पानी की रगड़, भार और दबाव से छोटे-छोटे टुकड़ों मे और फिर माइक्रो प्लास्टिक कणों मे टूटकर पानी मे फैल जाते हैं।

यही जल तुम्हारी गाय भी पीती है, तुम भी पीते हो, और तुम्हारे खेतों मे इसी पानी से सिंचाई होती है। मेरे जलीय जीव - मछली, चिड़िया, घड़ियाल, मगरमच्छ, उदबिलाव, मेढ़क आदि सभी तो पीते हैं यह जल। इस तरह यह प्लास्टिक के कण सब जीवों के अन्दर चले जाते हैं और फिर होती है सेहत खराब। यह सब कई सालों से हो रहा है।

प्लास्टिक का अपघटन सम्भव नहीं। यह ना ही गलता है, सड़ता है या घुलता है। यह तो एक जहरीला हानिकारक रसायन है जो आज मनुष्य के लिए विष का काम कर रहा है। एक समय वह भी था जब इसका आविष्कार वरदान माना गया था। वैसे बहुत साथ दिया है इसने तुम मानवों का। पर मानव ही सम्भाल नहीं पाया इसे। वैज्ञानिक समय-समय मे मेरे जल का परीक्षण करते रहते हैं और उन्होंने मेरे जल की गुणवत्ता (quality of water) मे कमी बताई और कई जगह माइक्रो प्लास्टिक कणों की उपस्थिति भी बताई।

② अब तुम कहोगे हम तो जल मे प्लास्टिक की थैली नहीं डालते। हमने तो डोने में पुष्प और दीप लिए थे और फूलों के साथ डोने गंगा मे बहाए। यह भी सच है। लेकिन इतने सालों से गंगा घाटों में हर रोज लोग फूल चढ़ा रहे हैं। कुछ दिन की बात होती या कुछ समय की तो शायद इन फूलों को मैं अपने जल में पचा पाती। लेकिन अब तो मामला ही अलग हो गया है। जानते हो प्रति साल 800,000,00,000 किलोग्राम फूल का कचरा गंगा मे फेंका जाता है या कहो बहाया जाता है। फूलों के पानी में सड़ने से कार्बनडाईऑक्साइड (CO_2) बढ़ जाती है और मछलियाँ मेरी बहने मरने लगती हैं। इस तरह जल में ऑक्सीजन का स्तर कम हो जाता है और ऐसे यौगिकों का निर्माण होता है जो विषाक्ता को पैदा करते हैं। [redacted] इस तरह मेरा पारिस्थितिकी तंत्र (ecosystem) प्रभावित होता है। साथ ही मेरे जल की गुणवत्ता (quality) पर भी प्रभाव पड़ता है।

समझे! तुम्हारी नासमझी से क्या सब हो रहा है। मेरी बात अभी खत्म नहीं हुई है। अगले अंक में इस वार्तालाप को आगे जारी रखेंगे।

डा० सुधा शर्मा

बच्चों की प्रतिक्रियाएं कोरोना पर

क्या कर रहे हो ?

क्या करोगे ?

क्या सीखा और जाना ?

क्या बताना चाहते हो ?

हमे जो पता नहीं था

आजकल कोरोना नाम की एक महामारी फैली हुई है। इसकी वजह से हमारा स्कूल भी बंद है। इस बिमारी की कोई भी दवा नहीं है। इसका इलाज है घर मे रहना। साबुन से हाथ धोना। घर से बाहर निकलने से पहले मास्क लगाएं और हाथ को सेनिटाइजर लगाना। एक दूसरे से दूरी भी बनाना।

(★) पावनी, कक्षा-3
ग्राम तुनवाला, दे. दून

हमने बच्चों की प्रतिक्रिया फोन, वीडियो कॉल और वॉटएप के द्वारा ली है। बच्चों को इससे जोड़ने के लिए उस इलाके के कोरोना वॉरियर को भी धन्यवाद

* हमे जो नहीं पता था वो भी आज कोरोना वायरस होने पर पता चल गया।
* हमने कभी सोचा नहीं था कि कोरोना वायरस के कारण हमारे आस-पास बाजार गाड़ियाँ बन्द हो जाएगी।
* आज हमारे सामने मे समस्या आई है कि अगर घर का सामान खतम होता है तो उसको हम आसानी से नहीं ला पाते। गाड़ी मिली तो दुकान बन्द। दुकान खुली मिली तो सामान दुकान मे खतम। तो हम कोरोना की वजह से आसानी से आ जा नहीं सकते। सामान को लाया व भिजवाया नहीं जा सकता।
* तो गाड़ी, दुकान व बाजार न होने के कारण आज इसकी अहमियत जान गये हैं।

(★) आँचल
कक्षा-10, रा. इ. का. नागथात, यूथ ग्रुप कलाक कालसी, सदस्य, दे. दून

जब कोरोना चला जाएगा मैं सबसे पहले अपने दोस्तो के साथ sleepover (रात में एक साथ सोना) करूगी। मैं आजकल अपने दोस्तों को बहुत miss करती हूँ।

(★) तारा शर्मा उम्र-7
बोस्टन, अमेरिका

मैं नानी के घर आऊंगी जब corona virus चला जाएगा। अभी तो मैं अपनी balcony मे खेलती हूँ अपनी दोस्त के साथ। वह भी अपनी balcony में खेलती है। हम दोनों balcony से बात करते हुए खेलते हैं।

(★) विभु नौटियाल,
उम्र-6, चंडीगढ़

⊙ लॉकडाउन में हमने देखा व सीखा कि माँ हमारे लिये कितनी मेहनत करती है। भाग दौड़ की जिन्दगी के बिना सादी जिन्दगी भी अच्छी लगती है।
⊙ हम अपनी मा की मदद करते हैं। नाश्ता तैयार करने और सफाई करने में।
⊙ अपना होमवर्क करते हैं और online पढ़ाई भी करते हैं।
⊙ रात को महाभारत और रामायण भी देखते हैं।

(★) चेतना शर्मा, कक्षा-6,
ब्यावर, राजस्थान

गाँव के लिए जानकारी

मेरा नाम मुस्कान है। मैं आप सभी को कहना चाहती हूँ आप सभी को पता है कि हमारे देश के प्रिय प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी जी के कहे अनुसार आप अपने-अपने घरों अपने परिवार के साथ सुरक्षित होगे और मैं उम्मीद करती हूँ कि आप खुद करोना वायरस से बचेगें और औरो को भी बचायेगें।

(★) मुस्कान, कक्षा-5,
ग्राम सिलना, बाल ग्रुप सदस्य, देहरादून

मैं घर मे रचनात्मक कार्य करता हूँ। You tube मे देखकर नई-नई चीजे बनाता हूँ। मैं अपनी छोटी बहन के लिए बचे कपड़ो से designer कपडे भी सिलता हूँ। मुझे बहुत मजा आता है।

(★) ध्रुव वर्मा, कक्षा-7, ग्राम मियांवाला
दे. दून

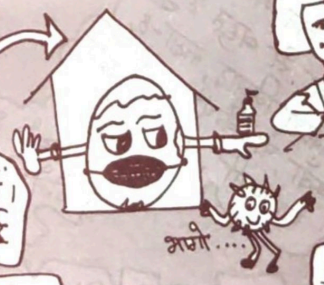

कोरोना पर बच्चों के मन की बात....

बनारस
बुलन्दशहर
आभार व्यक्त करते हैं गंगा प्रहरी श्री॰ नागेन्द्र निषाद जी व श्री॰ राहिल जी, WII, दे॰दून का। उनकी मदद से ऑनलाइन फीडबैक लिया गया।

बनारस

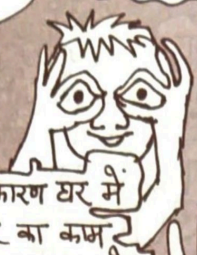

हम सब कोरोना के कारण घर में ही रहते हैं। और घर का काम काज करते हैं। जब हम घर से बाहर निकलते हैं तो मास्क लगाकर निकलते हैं। हम घर में ही रहकर कोरोना वायरस से लड़ेंगे और उसे हिन्दुस्तान में ही मारेंगे। कोरोना के कारण हम बाहर खेलने नहीं जाते हैं और घर पर रहकर खेलते हैं जैसे लूडो। पढ़ाई भी करते हैं और हाथ भी धोते रहते हैं। हमारे पास जो कोई साबुन है उसी से आप भी धोना।

⊛ श्वेता निषाद, कक्षा-8,
ढकवाँ कैंथी, वाराणसी

क्रिकेट और लूडो में बड़ा मजा आता है। एक साथ चारों का समय बीत जाता है। खेलने में खाने पीने की नहीं रहती है धुन। मम्मी की दिनभर डांट रहे हैं सुन। घर में समय बिता रहे हैं खेल कूद और टी॰वी॰ से। समय पर पढ़ लेते हैं किताबों और कहानियों से। थोड़ी बदमाशी भी करते हैं। मन मनोरंजन हो जाता है। दादा दादी की सेवा से बहुत ही आशीर्वाद पाते हैं।

⊡ आकाश निषाद, कक्षा-8,
ढकवाँ, पो॰ कैंथी,
वाराणसी, बाह गंगा प्रहरी

बुलन्दशहर

कोरोना की वजह से आप अपने आस-पास, प्रकृति और गांव में क्या बदलाव देख रहे हैं?

कोरोना की वजह से बदलाव देखा है।

- जैसे नदियों के पानी में जो प्रदूषण आता था वह अब नहीं आ रहा है।
- वाहनों के ठहराव से अब वायु प्रदूषण में भी बदलाव आया है और हवा पूरी तरह से शुद्ध हो गई है।
- और जब से लॉकडाउन हुआ है हमारे गाँव में बिमार होना भी कम हो गया है।

इससे अनुमान लगाया जा सकता है हमने प्रकृति से खिलवाड़ किया और उसका नतीजा एक कोरोना जैसी बिमारी के रूप में देख ही लिया है। आगे हम लोगों को सुधरने की आवश्यकता है। अभी तो हम अपने घरों में बन्द हुए हैं। आगे पता नहीं क्या-क्या वायरस जन्म लेंगे। और हम कितना भी घरों में छुप जाये लेकिन हम महामारी से नहीं बच सकेंगे।

दिनांक 20/5/2020 ⊛ नीलम कुमारी
कक्षा-7,
गांव-निबाड़ी खादर,
बुलन्दशहर, उ॰प्र॰

वाहनों के ठहराव होने के कारण हवा भी साफ हो गई है। लोग घरों में बंद हैं। औद्योगिक फैक्ट्रियां भी बंद पड़ी हैं। जिससे नदियों में आने वाली गंदगी में भी कमी आई है। और नदियों का जल साफ एवं शुद्ध हुआ है। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि हम मानवों ने प्रकृति से खिलवाड़ किया है।

⊡ अजय कुमार
कक्षा-7, गांव
निबाड़ी खादर
बु॰शहर (उ॰प्र॰)

क्या आप लॉकडाउन से चिंतित हैं?

हम लॉकडाउन से चिंतित नहीं हैं। किन्तु, कुछ परेशानियों का हमें सामना करना पड़ रहा है। हम गरीब मजदूर किसान के बच्चे हैं। पिता जो किसी तरह पालन-पोषण करते हैं। हमे घर मे रहकर सुरक्षित तो महसूस हो रहा है किन्तु दिन-प्रतिदिन खाद्यान्न की कमी होती जा रही है। किन्तु मैं खुश हूँ कि सरकार ने लॉकडाउन लगाकर अपने देश को हर देश की अपेक्षा हमारे देश को सुरक्षित रख सका है।

⊡ पवन कुमार प्रजापति
कक्षा 11, मोहनपुर पोस्ट,
श्रीकंठपुर वाराणसी, गंगा प्रहरी

कोरोना पर बच्चों के मन की बात...

क्या इस लॉकडाउन से आप चिंतित हैं?

हाँ, मैं इस लॉकडाउन से चिंतित हूँ क्योंकि
→ इस लॉकडाउन के कारण सभी स्कूल बंद हैं, जिसकी वजह से हम बच्चे अपनी पढ़ाई नहीं कर पा रहे हैं।
→ हम सब अपने दोस्तों के साथ खेलने भी नहीं जा पाते हैं।
→ सभी लोगों का व्यापारियों, दुकानदारों का धंधा ठप हो गया है और वे बेरोजगार होते जा रहे हैं।
→ महामारी में सबसे ज्यादा गरीब बच्चे प्रभावित हैं, जिनके माता-पिता के पास आर्थिक सुरक्षा नहीं है।

मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि इस लॉकडाउन का अच्छे से पालन करें ताकि हम इस महामारी को जल्द से जल्द एकजुट होकर खत्म कर सकें और फिर से अपना जीवन पहले की तरह व्यतीत कर सकें।

✪ शान्तनु सिलोड़ी, कक्षा-6
सरस्वती पुरम, मिंयावाला, दे.दून

अमेरिका

मैं चिंतित नहीं हूँ। मुझे विश्वास है कि सब कुछ ठीक हो जाएगा। मुझे पता है हमारे scientists और doctors रात दिन research (शोध) कर रहे हैं और बहुत जल्द हम सब के लिए vaccine (वैक्सीन) आएगी। मैं बहुत miss कर रही हूँ अपने friends को और वहां स्कूल में सबसे मिलकर बात करना भी miss कर रही हूँ।

✪ Sara Sharma
class 9th,
Boston, USA

चंडीगढ़

यह lockdown हमारी safety के लिए किया जा रहा है। यह हमारी नैतिक जिम्मेदारी है कि हम इसे follow करें। हमें अपने माननीय प्रधान मंत्री जी को धन्यवाद देना चाहिए कि उन्होंने सही समय में निर्णय लिया। ताकि वे हमारे देश को व जनता को तैयार कर सके COVID 19 से लड़ने के लिए। हमारे मित्र देश USA अपनी अर्थव्यवस्था को बनाए रखना चाहता था इसलिए उन्होंने lockdown करने में देर की। इसलिए वहां death rate ज्यादा था। हमारे यहां lockdown के दौरान hospital और isolation wards तैयार कर लिए गए हैं। अब हमारा देश तैयार है COVID 19 से लड़ने के लिए।

✪ नैनी नौटियाल
कक्षा-10, चंडीगढ़, पंजाब

देहरादून

कोरोना की वजह से हम प्रकृति में बहुत सारे बदलाव देख रहे हैं। हर जगह अच्छी हवा है और नदियों का पानी बहुत ज्यादा साफ हो गया है। मेरे पापा राफ्टिंग में काम करते हैं और हमारे साथ ज्यादा समय नहीं बिताते हैं। तो अब जब लॉकडाउन है तो हम बहुत सारे गेम खेलते हैं और मेरे पापा बहुत सारा अच्छा खाना बनाते हैं और हम साथ में छत पर टहलते हैं। हमारे चारों तरफ का वातावरण शुद्ध हो गया है।

✪ संस्कृति, कक्षा-8,
ग्राम मिंयावाला, दे.दून
K.V.I.I.P.

कोरोना की वजह से कई बदलाव देख रहे हैं:-
⊙ पूरा वातावरण शुद्ध एवं हरा-भरा हो गया है।
⊙ चारों तरफ हरियाली और पक्षियों का झुंड आकाश में उड़ता हुआ सुंदर लग रहा है।
⊙ नदियों का पानी स्वच्छ हो गया है और पहले की तरह छोटी-छोटी मछलियों के साथ-2 व्हेल, डॉलफिन आदि मछलियां दिखने लगी हैं।

✪ स्वाति सिलोड़ी,
कक्षा-६, सरस्वती पुरम, मिंयावाला, दे.दून

परेशानियाँ

अब परेशानी यह है कि कोरोना के कारण हमारा घर से बाहर निकलना मुश्किल होने लगा है। हमारे गांव से किसी भी व्यक्ति को बाजार या आस-पास के घरों में नहीं जाने देते हैं। सामान के लिए जब बाजार निकलते हैं तो सारी दुकानें भी बन्द पड़ी रहती हैं। गाँव के सभी लोगों को समान आदि मंगवाने की भी समस्या है। नागथात, कालसी, विकासनगर आदि बाजारों में गाड़ियां नहीं जाती सामान लाने व लेजाने में भी समस्या का सामना करना पड़ रहा है। धन्यवाद।

कालसी ब्लॉक

✪ मानिषा, कक्षा-10, गाँव सिल्ला
Youth Group, ब्लॉक कालसी, दे.दून

कविताएँ

मिलकर कोरोना को हराना है

मिलकर कोरोना को हराना है,
घर से हमें कहीं नहीं जाना है,
हाथ किसी से नहीं मिलाना है,
चेहरे मे हाथ नहीं लगाना है,
बार-बार अच्छे से हाथ धोते जाना है,
सैनेटाइज करके देश को स्वच्छ बनाना है,
बचाव ही इलाज है यह समझाना है,
कोरोना से हमको नहीं घबराना है,
सावधानी रखकर कोरोना को मिटाना,
देशहित में सभी को यह कदम उठाना है।

कक्षा-12 ✪ Vinshi Joshi, ग्राम दमूना, दू.

कोरोना

डरता नहीं हू मैं कोरोना से
वीर योद्धा कहलाता हूँ
घर मे रहकर मार भगाऊंगा
दूसरे तक नहीं पहुँचाऊंगा
बार-बार हाथ धोएगें साबुन से
साफ सफाई करेंगे हम झाड़ू से
मास्क हमेशा हम पहनेंगे
दूसरो को पहनने के लिए बताएगें
सावधानी ही सुरक्षा का
सबसे बड़ा हथियार है
लॉकडाउन मे हम इस
हथियार को ही अपनाएगें।
और इसी तरह से हमे लॉकडाउन मे
रहकर कोरोना से लड़ना होगा
हम सब अन्दर तो कोरोना वायरस बाहर
कोरोना का अन्त ही हमारा जीवन है।

✪ श्वेता निषाद, कक्षा-8,
पूर्व मा० वि०, ढकवां कैथी
वाराणसी, उ॰प्र॰

चुटकुले

① मास्टरजी : बच्चों, इरादे बुलंद होने चाहिए। पत्थर से भी पानी निकाला जा सकता है।
पप्पू : मैं लोहे से भी पानी निकाल सकता हूँ, सर।
मास्टर जी : अच्छा वो कैसे?
पप्पू : हैण्ड पम्प से।

② पप्पू : आपने मुझे पहचाना? (लड़की से)
लड़की : नहीं। कौन है आप?
पप्पू : मैं वही हूँ जिसे आपने कल भी नहीं पहचाना था।

काव्या कुमाऊ
✪ प्रीति उनियाल
B.A.
ग्राम सिल्ला

पापा : बेटा लड़की वाले आ रहे हैं। उनके सामने थोड़ी लम्बी लम्बी फेकना।
लड़की वालो के आते ही।
बेटा : पापा जरा चाबी देना। वो ट्रेन धूप में खड़ी है। जरा अंदर कर देता हूँ।

✪ पूजा, कक्षा-12
ग्राम सिल्ला

① 22nd April → Poster making
② 23rd April → Plant a tree and take a selfie
③ 24th April → Hold a board with message
④ 25th April → Take a Oath for protection of env.
⑤ 26th April → Recycling or reuse of plastic
⑥ 27th April → Release of video of Hum Honge Kamyab.

इस बार हमने 5 दिन का मनाया earth day. हर दिन का ek थीम था।

स्वामी मुद्रक व प्रकाशक डॉ अनिल प्रकाश जोशी द्वारा शिखर इन्टरप्राइजेज सत्यभामा निवास, तरूण विहार देहरादून दूरभाष : 0135–2532753 से मुद्रित तथा हैस्को ग्राम शुक्लापुर, पो.ऑ–अम्बीवाला, वाया प्रेमनगर, देहरादून से प्रकाशित।

सम्पादक : डा. सुधा कबटियाल
पता : डा. सुधा कबटियाल
ग्राम–मियांवाला, पो.ऑ.–हर्रावाला,
देहरादून–248001

सहयोग टीम : समस्त बच्चे

हमारा पता : बच्चों का अखबार
हैस्को गाँव
ग्राम शुक्लापुर, पो.ऑ.–अम्बीवाला,
वाया प्रेमनगर, देहरादून–248001

सीमित प्रचार प्रसार हेतु

BOOK POST CONTAINING PERIODICALS

हिमालयी बच्चों का अखबार

RNI NO. UTTHIN/2003/10745

सेवा में,
....
....
....
....
....

भारतीय वन्यजीव संस्थान Wildlife Institute of India
राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन National Mission for Clean Ganga

साभार – जैव विविधता संरक्षण एवं गंगा जीर्णोद्धार द्वारा उत्प्रेरित एवं सहयोग